ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

बंगाल विभाजन एवं राष्ट्रीयता के उत्प्रेरक तत्व

KEY WORDS:

डॉ० नवनीता उपाध्याय* इतिहास विभाग मगध विष्वविद्यालय *Corresponding Author

अंग्रेजों की साम्राज्यवादी नीति का प्रभाव पूरे भारतवर्श के राजनीतिक, समाजिक और आर्थिक पृश्ठभूमि पर पड़ा। आधूनिक भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं में "बंगाल–विभाजन" की घटना सम्पूर्ण भारतीय राजनीतिज्ञों एवं जनमानस को झकझोर कर रख दिया। इसके बहुत सारे राजनीतिक परिणाम बाहर आए।

19वीं षताब्दी के प्रारंभ में अंग्रेजों द्वारा किये गये कुछ परिवर्तन जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक अलग दिषा प्रदान किया। बंगाल–विभाजन का फैसला जिसे "बंग–भंग" के नाम से भी जाना जाता है भारतीय इतिहास की क्रांतिकारी घटना थी। इससे स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत क्रांतिकारियों को एक नई दिषा भी मिल गई। भारतीय जनता के सामने अंग्रेजों की नीति सामने आ गई जो थी, "फुट डालों और राज्य करो", देष बांटो, जनता को लूटो, और षासन करो" इसी नीति के आधार पर अंग्रेजी षासन अपने को स्थापित करने में कामयाब हो रही थी। लेकिन यह कहा जा सकता है "बंगाल–विभाजन" के निर्णय ने देष की स्वतंत्रता और विभाजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बंगाल विभाजन का फैसला ब्रिटिष वायसराय लार्ड कर्जन के द्वारा लिया गया था। हालांकि लार्ड कर्जन के इस निर्णय का घोर विरोध हुआ उस समय के राष्ट्रवादी नेताओं को भारी जन समर्थन मिलने लगा था। 16 अक्टुबर 1905 को बंगाल–विभाजन के बाद देष को बहुत बड़े परिवर्तन का सामना करना पड़ा था। हांलाकि इससे अंग्रेजी सरकार के कुछ उद्देष्य पूरे हुए जिससे भारतीयों को बहुत हानि हुई, "बंग–भंग" के पहले बंगाली गर्वनेंस में काफी धाक थी जो कि विभाजन के बाद कम हो गई। बंगाल–विभाजन का हिन्दुओं ने घोर विरोध किया और अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध व्यापक रोश फैला गया जिनमें कई अहिंसक आन्दोलन षामिल थे। यहाँ तक कि वेस्ट बंगाल के नए बने प्रेविनेंस के गर्वनर की हत्या तक की प्लानिंग की गई थी।

लार्ड कर्जन की सम्राजयवादी नीति और "फुट डालों राज करों" वाली नीति ने बंग–भंग करके हिन्दूओं और मुसलमानों के बीच जातीय संघर्श बढ़ा कर गलत फहमियां पैदा कर दिया। हालांकि जनरल लार्ड कर्जन ने तर्क दिया कि इतने बड़े प्रांत को कूषल प्रषासन देना संभव नहीं है, इसलिए इसका बटवारा हो जाना चाहिए। परन्तु राजनीतिक जागृति को कुचलने के लिए कर्जन ने बंगाल–विभाजन को स्वीकृति दी। उसने खुद कहा भी था, कि यह बंगाल विभाजन केवल षासन की सुविधा के लिए नहीं की गई है बल्कि इसके द्वारा एक मुस्लिम प्रांत बनाया जा रहा है जिसमे इसलाम और उनके अनुयायियों की प्रधानंता होगी। इस तरह "बंगाल–विभाजन" लार्ड कर्जन की धुर्तता और कुटनीति से भरा कार्य था।

बंगाल विभाजन राष्ट्रीयता के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। विभाजन के बाद बंगाल और पूरी देष की जनता अपने आप को ठगा हुआ महसूस करने लगी। 16 अक्टुबर 1905 को जिस दिन बंगाल का विभाजन हुआ उस दिन को "विरोध दिवस" के रूप में मनाया गया। जुलूस निकाले गये, प्रदर्षनी हुई और सड़कों पर "वन्देमातरम्" के नारे गुंजने लगे। बंगाल ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण भारत में उत्तेजना व्याप्त हो गई। विदेषी वस्तुओं का बहिश्कार और स्वदेषी वस्तुओं का प्रचार होने लगा। सभी स्कुल–कॉलेजों में भी विरोधी स्वर निकलने लगे। जिससे स्वदेषी आन्दोलन और राष्ट्रीयता की भावना को बल मिला। अंग्रेजी सरकार ने भारतीयों के बिद्रोह को कुचलने के लिए दमनचक्र चलाया और सम्प्रदायिकता फैलाकर दंगे करवाना षुरू किया आन्दोलनकारियों को जेल में डाल दिया गया। रविन्द्र नाथ टैगोर ने 16 अक्टुबर 1905 को "राखी दिवस" के रूप में मनाया। उनका उद्देष्य था कि बंगाल को विभाजित कर अंग्रज उनकी एकता में दरार नहीं डाल सकते। रविन्द्र नाथ टैगोर ने "अमार षोनार बांगला" भी बंग–भंग के विरोध में ही लिखा था जो आगे चलकर 1972 में बंगला देष का राष्ट्रीयगान बना। 1905 में टैगोर का लिखा "वन्दे मातरम्" भी क्रांतिकारियों के लिए राष्ट्रगान बना। बंगाल विभाजन से देष में कई राजनीतिक परिवर्तन हुए। मुस्लिम सम्प्रदाय इस विभाजन को स्वीकार कर यह मनने लगे कि अलग राज्य में उन्हें रोजगार और षिक्षा में आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। हालांकि पष्चिम बंगाल सबसे ज्यादा घनी प्रदेष और राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र बिन्दू था। अतः बंग–भंग द्वारा इसी जागृति को कुचलना अंग्रेजी सरकार की राजनीतिक और कुटनीतिक मंषा थी।

उत्तर पूर्वी बंगाल के राजषाही, ढाका और चटगांव डिवीजन में आनेवाले, 15 को असम में मिला दिया गया और पूर्वी बंगाल तथा असम नाम से एक नया प्रान्त बना दिया गया और उसे बंगाल से अलग कर दिया गया। विभाजन के बाद बंगाल दो टुकड़ों में बट गया था, पुर्वी और पष्चिमी बंगाल। पूर्वी बंगाल का कुल क्षेत्रफल 1,06,540 वर्ग मील था। इसकी राजधानी "ढाका" थी। वहीं प० बंगाल में बिहार, ओडिषा और वर्तमान पष्चिम बंगाल का क्षेत्र था जो 1,41,580 वर्ग मील था। 1905 ई० में षिमला से बंगाल विभाजन की सरकारी घोषणा कर दी गई और 20 जुलाई 1905 ई० को सम्पूर्ण योजना को लागु कर दिया गया। जिसका व्यापक स्तर पर विरोध हुआ और स्वदेषी आन्दोलन का जन्म हूआ। 17 जुलाई 1905 को सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने जो बैठक बुलाई उसी में स्वदेषी आंदोलन की नींव रखी गई। स्वदेषी आंदोलन के तहत विदेषी वस्तुओं के बहिष्कार की गई और घरेलू वस्तुओं की मांग बढ़ गई। बुनाई उद्योग, रेषम बुनाई, पारम्परिक षिल्प का पुनरूद्धार षुरू हो गया। 1906 में बंगालक्ष्मी कपास मील की स्थापना हूई।

बंगाल विभाजन के परिणाम

बंगाल विभाजन का यह परिणाम हुआ कि स्वराज्य की मांग तेज हो गई। बंगाल विभाजन के बाद चले कई स्वदेषी आन्दोलन से कई बैक्षिक परिवर्तन हुए जिसमें बंगाल नेषनल कॉलेज की स्थापना हुई। विभाजन के बाद प्रषासनीक व्यवस्था में भी सुधार हुआ। नये स्कुल खुलने से आम जनता को रोजगार के सुअवसर मिलने का फायदा हुआ। स्वराज के मांग तेज होने से क्रांतिकारी नेता जो स्वराज्य के प्रबल समर्थक थे लोगों को जागृत करने का कार्य किए, वे थे लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्रपाल। जिन्होने सबसे पहले स्वराज की मांग की। बाल गंगाधर तिलक ने यह नारा दिया कि "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर ही रहुंगा।" बंगाल विभाजन के बाद कॉंग्रेस दो दलों में विभाजित हुई, (1) गरम दल और (2) नरम दल। गरम दल के नेता ज्यादा लोकप्रिय थे। 1906 में कलकत्ता में दादा भाई नोरोजी के नेतृत्व में कॉंग्रेस का अधिवेषन हुआ इसमें गरम दल प्रभावी रहा और उन्होने यह प्रण करवाए जो निम्न लिखित है।

- ऽबंगाल विभाजन के विरूद्ध संकल्प
- ऽस्वराज्य की मांग
- ऽस्वदेषी अपनाने का संकल्प
- ऽबहिश्कार का संकल्प

स्वदेषी आन्दोलन को घर–घर तक पहुंचाने के लिए अखबार, गानों, विदेषी कपड़ों, षक्कर और नमक की होली जलाने से जैसे कई कार्य किए गए। ब्राह्मणों ने ऐसे किसी भी घर में षुभ कार्य करने से मना कर दिया। जहाँ पर यूरोपियन नमक या षक्कर का उपयोग होता हो। स्वदेषी आंदोलन से देष में भारतीय सामग्री की मांग बढ़ गई इसलिए नई इंडस्ट्री स्थापित करने की जरूरत महसुस हुयी। जे० एन टाटा ने आयरन और स्टील की फैक्ट्री लगाई। इस आंदोलन से मैनचेस्टर क्लॉथ को निषाना बनाया गया। बंगाल विभाजन के परिणाम बहुत ही महत्वपूर्ण थे राष्ट्रवादियों के रोश चरम सीमा तक पहूँच गया और राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। इसने भारतीयों को एकजुट कर दिया।

लार्ड कर्जन ने बंगाल–विभाजन के द्वारा भारतीय राष्ट्रीयता को कुचलने का प्रयास किया जो उसके लिए उल्टा पड़ गयी। कर्जन की इच्छा थी कि ब्रिटिष सम्राज्य सुरक्षित हो और उसे स्थायित्व प्रदान हो, पर बंगाल विभाजन और अपनी प्रक्रियावादी और साम्राज्यवादी नीतियों द्वारा उसने ब्रिटीष साम्राज्य का कब्र ही तैयार कर दिया। बंगाल विभाजन कर्जन की एक बड़ी भूल साबित हूई, जिसने ब्रिटिषों को लाभ की जगह हानि ही पहूंचाई। राजनीतिक विरोध के परिणामस्वरूप अंग्रजों ने बंगाल के विभाजन के अपने पूर्व निर्णय को पूर्ववत करने का निर्णय लिया और 1911 में बंगाल के दो हिस्सों को फिर से मिला दिया गया। और बंगाल का पूर्ण एकीकरण हूआ जिसमें प्रोविंस को भाशा के आधार पर विभाजित किया गया ना कि धर्म के आधार पर, जिससे हिन्दी, उड़िया और असामी बोलने वाले क्षेत्र अलग हो गए और ब्रिटीष इंडिया की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली बनाई गई।बंगाल विभाजन अंग्रेजी हुकूमत के मंसूबे पर पानी फेर दिया। नतीजन 1905 के अंत तक लार्ड कर्जन को वापस इंग्लैण्ड बूला लिया गया। बंगाल विभाजन ने हिन्दू मुस्लिम एकता को भी विभाजित का दिया। विभाजन के पहले सभी ब्रिटीष विरोधी आन्दोलन में हिन्दू–मुस्लिम एकता भारतीय षक्ति का प्रतिक था जो बंगाल–विभाजन के बाद दो गूटों में बट गई। कुछ हद तक जहा बंगाल विभाजन असफल रहा वही भारत में दरार पैदा करने तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता में फुट डालने में अंग्रेजी सरकार कामयाब हो गयी, लेकिन अंग्रेज जो बाटना चाहते थे वे सचमूच बट चुका था। अंग्रेजों ने मूसलमानों का उपयोग सांम्प्रदायिकता के जहर को घेलने में किया।

निश्कर्श

अंत मे हम कह सकते है कि लार्ड कर्जन की साम्राज्य विस्तार की नीति ने जहां समप्रदायिकता फैलाने का कार्य किया वही राष्ट्रीयता के मार्ग को भी प्रस्तुत किया। आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसका व्यापक असर रहा। इस विभाजन से देष में आत्म निर्भरता एवं आत्मषक्ति का नारा बुलंद हुआ। इससे एकता की नई परिभाशा का संचार हूआ जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय षिक्षा के विकास द्वारा लोगों का जागृत करने में अपना योगदान दिया। और देष में राष्ट्रीय क्रांति की लहर दौड़ गई।

संदर्भ स्त्रोत

1. भारत का स्वतंत्रता संघर्श – विपिन चंद्र, पृ० 82
2. आधुनिक भारत – सूमित सरकार, पृ० 130
3. आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन – बी०एल०ग्रोवर, अंलका मेहता
4. आधुनिक भारत का इतिहास एवं विरासत – पी०एल०गौतम